संपादकीय

हम 5 सितंबर को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। इस वर्ष शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में पूरे देश में शिक्षक दिवस को 5 सितंबर से 17 सितंबर, 2021 तक 'शिक्षक पर्व' के रूप में मनाया गया। यह पर्व *'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के केंद्र में अध्यापक' पर केंद्रित था। यह पर्व राष्ट्र के विकास में अध्यापकों के योगदान की सराहना करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए मनाया गया, ताकि शिक्षा के समान एवं समावेशी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस पर्व का उद्देश्य अध्यापकों को अपने पेशे एवं विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील होने तथा शिक्षण-अधिगम के नवाचारी तरीकों को अपनाते हुए अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना था।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान डिजिटल शिक्षा एक विकल्प के रूप में उभरी है। जिसने ई-लर्निंग के नवीन प्रयासों को बढ़ावा दिया है। इसी सरोकार पर आधारित लेख 'ई-लर्निंग— औपचारिक शिक्षा का एक विकल्प' में बताया गया है कि ई-लर्निंग शिक्षा का एक साधन है, जिसमें संचार, दक्षता और प्रौद्योगिकी आदि को शामिल किया गया है जो विद्यार्थियों के सीखने में सहायता प्रदान करती है। वहीं, 'कोविड-19 महामारी के दौरान भारत सहित वैश्विक स्तर पर विद्यालयी शिक्षा में हुए प्रयासों एवं बदलावों का विश्लेषण' लेख में विद्यालयी शिक्षा में आवश्यकता आधारित अनेक यथासंभव प्रयासों एवं प्रयोगों पर चर्चा की गई है। इस लेख में भारत सहित विश्व के कई देशों में बच्चों की पढ़ाई-लिखाई को यथासंभव निरंतर जारी रखने वाले विविध प्रयासों एवं पहलों को प्रस्तुत किया गया है।

ऊपर दिए गए दो लेखों की कड़ी में अगला लेख भी उसी परिप्रेक्ष्य से जुड़ा है। जिसका शीर्षक 'डर है कि हम डर न जाएँ (कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में भावी शिक्षा पर विमर्श)' में बालमन पर डर के सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया गया है, वहीं बालमन पर डर का नकारात्मक प्रभाव न पड़े उसके लिए माता-पिता परिवार एवं अध्यापकों को सतर्क रहना चाहिए। साथ ही, लेख में बच्चों में डर के प्रभाव को खत्म करने वाले उपायों एवं उपक्रमों की चर्चा भी की गई है।

अध्यापकों के विश्वास उनकी व्यक्तिगत धारणाओं और मतों को व्यक्त करते हैं। जिसका प्रभाव उनके अभ्यासों पर भी पड़ता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोध पत्र 'शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षण— नगरीय अध्यापकों के विश्वास' प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि कैसे विद्यालय और शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि अध्यापकों के विश्वासों को निर्धारित करती इस शोध अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि अध्यापकों के शिक्षणशास्त्रीय विश्वास, व्यावहारवादी अनुशासन एवं प्रबंधन तथा निर्माणवादी शिक्षण के मिश्रित रूप को प्रकट करते हैं।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनका सामाजिक विकास उनके आवासीय परिवेश पर भी

© NCERT not to be republished

निर्भर करता है। जिसे शोध पत्र 'उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर के संदर्भ में अध्ययन' में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीक प्रयोग व्यवहार को आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर प्रभावित करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में 'विद्यालय नेतृत्व और नेतृत्व विकास' नामक लेख दिया गया है, जो विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण, अनुशासन और सहभागी प्रबंधन, अभिभावकों और समुदाय के लिए स्थान, अध्यापक की स्वायत्तता और पेशेवर स्वतंत्रता, अकादमिक नियोजन एवं गुणवत्ता प्रबंधन, स्कूल प्रबंधन के लिए स्कूलों में अकादमिक नेतृत्व, सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा और प्रशिक्षण, नवीन साझेदारियाँ आदि बिंदुओं को प्रस्तुत करता है।

शोध में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, इसी कड़ी में गुणवत्ताविहीन 'शिकारी पत्रिकाओं' पर नियंत्रण इसी का एक भाग है। भारत में शिकारी पत्रिकाओं एवं गुणवत्ता रहित शोध प्रकाशनों पर नियंत्रण हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाओं की सूची 'केयर लिस्ट' के नाम से जारी की गई है। लेख 'पब्लिश-इन-इंडिया की संभावित रूपरेखा एवं शिकारी पत्रिकाओं पर नियंत्रण—एक समीक्षा' में भारत में गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाओं के प्रकाशन को बढ़ावा देने हेतु एक संभावित रूपरेखा सुझाई गई है।

भारत में उच्चतर शिक्षा के विकास एवं चुनौतियों पर आधारित लेख '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दृष्टिकोण से भारत में उच्चतर शिक्षा का विकास' दिया गया है। वहीं लेख 'प्रौढ़ शिक्षा कल, आज और कल' में प्रौढ़ शिक्षा में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर एवं स्थानीय स्तर पर किए गए प्रयासों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन हेतु विभिन्न सुझाव भी दिए गए हैं। यह लेख *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के बिंदु 21 में दिए गए प्रौढ़ शिक्षा और जीवनपर्यंत सीखने के विशेष प्रावधानों की भी चर्चा करता है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, क्षेत्र (फील्ड) अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished